ISSN: 2582-7162
शोध-पत्र

हिमांशु जोशी के उपन्यासों की उपादेयता

डॉ. नीलम त्यागी[1], राधा[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी विभागाध्यक्ष, निम्स यूनिवर्सिटी, जयपुर, राजस्थान
[2]शोध छात्रा, हिन्दी, निम्स यूनिवर्सिटी, जयपुर, राजस्थान

Corresponding Author:
राधा
शोध छात्रा, हिन्दी, निम्स यूनिवर्सिटी, जयपुर, राजस्थान
Email: radharajput1785@gmail.com
Received 2022 Feb. 15, Accepted 2022 Feb. 22, Published - 2022 March. 04

शोध सारांश

अनुभूति की अभिव्यक्ति ही साहित्य है। साहित्य जीवन की नींव है। इसमें मानव हित सर्वोपरि होता है। आज समस्त साहित्य विधाओं में जीवन का समस्त रूप व्यक्त करने का सशक्त माध्यम उपन्यास साहित्य है। किसी भी राष्ट्र या सभ्यता की जानकारी उसके साहित्य से प्राप्त होती है।

हिमांशु जोशी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार है। इनका कृतित्व अविस्मरणीय हैं। इनकी कृतियाँ सामान्य जीवन की विसंगतियां, विषमताएं एवं विवशताएं लिए है। हिमांशु जोाशी जी के उपन्यास भाव-प्रधान, चरित्र प्रधान, समस्या प्रधान, कथानक को लेकर निर्मित हुए है। उनके चरित्र शिक्षित-अशिक्षित, शहरी-ग्रामीण, जमींदार, भूमिहीन, गरीब-अमीर आदि है। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं नैतिक विसंगतियों को उजागर किया हैं।

आज भी समाज में अनेक विसंगतियां मौजूद है। इन सभी पर अंकुश लगाया जाना चाहिए। तभी हमारा देश प्रगति करेगा।

मुख्य शब्दः- स्वतंत्रता संग्राम, अन्याय, शोषण, बेरोजगारी, जमींदार, पटवारी, नशाखोरी, अशिक्षित, साहित्य, अंधविश्वास, अबला नारी।

साहित्य समाज का दर्पण है। एक साहित्यकार इसी साहित्यिक दर्पण के माध्यम से समाज की यथार्थता को हमारे समक्ष रखने का मौलिक प्रयत्न करता है। रचना की जीवंवता उसकी सार्थक होने पर निर्भर करती है।

बींसवी शताब्दी हिन्दी उपन्यास लेखन की दृष्टि से चिस्मरणीय है। हिन्दी उपन्यासों का इस काल में आश्चर्यजनक विकास हुआ। इस काल ने साहित्य की अन्य विधाओं-कविता, निबंध, एकांकी, नाटक आदि सभी को पीछे छोड़ दिया। आज उपन्यासों के माध्यम से विचारों की प्रक्रिया में तेजी आई है। समाज की समस्याओं को उपन्यासों के माध्यम से उजागर किया जा रहा है।

भारतीय समाज में हिंदी के अनेक साहित्यकार हुए। उन साहित्यकारों में हिमांशु जोशी जी भी प्रमुख है। हिमांशु जोशी बहुमुखी प्रतिभा के धनी कहानीकार, उपन्यासकार, रूपककार, कवि, पत्रकार, संपादक, निर्भीक तथा साहसी साहित्यकार है। उनका जन्म 4 मई 1835 को उत्तराखंड के चंपावत जिले के 'जोस्यूड़ा' गाँव में हुआ। ये लगभग 29 वर्षों तक 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में वरिष्ठ पत्रकार रहने के साथ-साथ पिछले चालीस वर्षों से निरंतर लेखन कार्य में लगे रहे। हिन्दी फिल्मों के लिए भी इन्होंने लेखन कार्य किया। इनकी रचनाओं का कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

हिमांशु जोशी जी ने उपन्यास, कहानियाँ, कविता और यात्रा वृतांत लिखे। उनके उपन्यासों का वर्णन निम्न है:-

अरण्यः- हिमांशु जोशी ने अपना पहला उपन्यास 'बुरांस फूलते तो है' लिखा। यह सन् 1965 में प्रकाशित हुआ। उनके बार-बार परिश्रम से 'बुरांश फूलते तो है' उपन्यास को नया नाम 'अरण्य' मिला। यह हिमांशु जोशी का पहला आंचलिक उपन्यास है। इसमें पहाड़ी जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है।

इस उपन्यास में हिमांशु जोशी ने पहाड़ के लोगों की पहाड़-सी जिन्दगी, प्रपंच भरी चमक लिए हिरदैराम पंडित, निश्छल माधव मामा, पहाड़ के जीवन की निर्धनता, शोषण का कुचक्र, अविस्मरणीय मानिक और हड़प ली गई उसकी जायदाद, मायके न लौटने वाली सुक्की, माधव प्रधान और बुजुर्ग ठेकेदार आदि का बखूबी वर्णन किया गया है।

इस उपन्यास में मानिक, कावेरी तथा इनके परिवार में आयी उथल-पुथल का वर्णन किया गया है। इन परिवारों की यातनाएँ, संघर्षमय जीवन, अंधविश्वास, झूठे इल्जाम का शिकार, बेकसूरी, अन्याय, गरीबी से संघर्ष, अत्याचार आदि को उजागर करना हिमांशु जोशी जी का मुख्य उद्देश्य रहा है। उपन्यास में पहाड़ी बोलचाल के शब्द आँचलिकता को उजागर करते हैं। ''पटवारी ने कुत्ते के सामने फेंके टुकड़े की तरह नफरत से दस का एक पत्ता गिराया, बड़ी श्रद्धा से दोनों हाथो से पुरूषोत्तम का' ने जिसे उठा लिया।''[1]

महासागर:-

'महासागर' हिमांशु जोशी का दूसरा उपन्यास है। यह 1972 में प्रकाशित हुआ। इसमें स्वतंत्रता संग्राम में 'काला पानी' की सजा काटते-काटते मारे गये स्वतंत्रता सेनानी के परिवार की व्यथा कथा है। यह एक ऐसे युवक साकेत की कहानी है जो अपने मध्यम आकार के गरीब परिवार का एक मात्र आश्रय है। वह भावुक एवं कर्मठ व्यक्ति है जो भटक जाता है।

'महासागर' में उन लोगों की दर्द भरी कहानी है जिन्हें नियति ने स्वनिर्मित दुखों में जीवन जीने को विवश किया है।

हिमांशु जोशी ने दीपदी, छाया, नीना, साकेत के माध्यम से अकेलेपन, समाज द्वारा परायी स्त्री को स्वीकार न किये जाने की समस्या, आधुनिक महानगरीय भोगवादी दृष्टिकोण जैसे विषयों पर सूक्ष्म दृष्टि से प्रकाश डाला है।

वर्तमान समाज का स्वरूप समाजवादी है फिर भी सामाजिक परम्पराओं एवं रूढ़ियों से अलग हो पाना सर्वथा कठिन है। संघर्ष की चेतना नई पीढ़ी में गतिशील है।

''कुछ झोपड़ियों की बाहरी दीवारों पर भूत-प्रेतों के भयानक मुखौटे टंगे है, जिनका उपयोग देवी-देवताओं की मान-मनौती या रात के सह-नृत्यों में किया जाता है।''[2]

प्रस्तुत रचना के माध्यम से आज की पीढ़ी के नवयुवकों को अन्याय, शोषण व अत्याचार के प्रति आवाज उठाने व गरीबों, जरूरतमंद लोगों की सहायता करने को प्रेरित किया गया है।

''जवाबदार मजदूरी के पूरे पैसे नहीं देता और कभी किसी ने कुछ कहा तो लाठी-पत्थर से मारता है। उस लड़की को पिछले महीने से अब तक आधी मजदूरी भी नहीं मिली। कल इसने पत्थर से उसके सिर पर मारा। उसके बाल नोचे।''[3]

'छाया मत छूना मन' हिमांशु जोशी का तीसरा उपन्यास है। यह 1973 में प्रकाशित हुआ। यह एक मध्यम-वर्गीय परिवार में जन्मी एक युवती 'वसुधा' के संघर्षमय जीवन पर आधारित उपन्यास है। वसुधा अपने परिवार के प्रति समर्पित है। वह स्वयं की चिंता न करके अपने पिता, बहन कंची और घर के बारे में सोचती रहती है। वह घर में और घर से बाहर दोहरा संघर्ष झेलती है।

''मुझे कहीं नहीं दिखाना। जब मैं जीना ही नहीं चाहती, तब तुम्हारे बड़े-बड़े एक्सपर्ट डॉक्टर क्या कर लेंगे?''[4]

इस प्रकार इस उपन्यास में स्त्री सहकर्मियों और कर्मचारियों के प्रति पुरूषों की शोषणकारी मनोवृत्ति को उजागर किया गया है। वसुधा के त्याग व संघर्षमय जीवन को सहज ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

'समय साक्षी है' हिमांशु जोशी का 1974 में प्रकाशित उपन्यास है। इस उपन्यास में स्वाधीन भारत का सच है। यह उपन्यास राजनीतिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। यह राजनीतिक भ्रष्टाचार को उजागर करता है। प्रस्तुत उपन्यास में राजनीति में फैली स्वार्थपरता, अवसरवादिता, भ्रष्टाचार, विलासिता और स्त्री के शोषण को उजागर किया गया है।

''जनतंत्र के प्रबल पहरी, जनतंत्र की रक्षा के नाम पर खुलेआम राज्यों को बेच-खरीद रहे थे।''[5]

हिमांशु जोशी का उद्देश्य इस उपन्यास के माध्यम से राजनीतिक विसंगतियां, अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार तथा रिश्वतखोरी को उजागर करना है।

यह उपन्यास भ्रष्टाचार की सारी सीमा पार करता है। इस उपन्यास में यह चित्रित किया गया है कि राजनीतिज्ञों के सामने अपना-पराया कुछ नहीं होता वह अपने स्वार्थ के लिए सगे को भी फंसाने से पीछे नहीं हटते।

वर्तमान समय में भी व्यक्तियों को अनेक प्रकार की विसंगतियों राजनीति में व्याप्त अन्याय, अत्याचार, उत्पीड़न तथा शोषण का शिकार होना पड़ता है। इसके प्रति व्यक्ति को आवाज उठानी चाहिए। यदि व्यक्ति स्वयं से यह पहल करेगा तो दूसरे व्यक्ति भी देखकर आवाज उठाने का प्रयास करेंगे।

'कगार की आग' सन् 1976 में प्रकाशित उपन्यास है। यह पहाड़ी अँचल के जीवन पर आधारित है। गोमती अनाथ है, ऐसे में उसके मामा-मामी उससे दुगुनी उम्र के ठेकेदार से उसकी शादी करके अपना दायित्व पूरा कर लेते है। वहाँ उसे अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। गोमती, पिरमा तथा कुन्नु के माध्यम से समाज का सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है। इन्हें समाज द्वारा बहिष्कृत कर दिया जाता है।

इस प्रकार का उपन्यास के माध्यम से गरीबी, अत्याचार, शोषण व शोषक आदि को बखूबी उजागर किया गया है कि किस प्रकार गरीबी के कारण व्यक्ति दो वक्त की रोटी का भी जुगाड़ नही कर पाता है।

गोमती का शोषण बाहर के लोगों द्वारा नहीं बल्कि परिवार के लोगों द्वारा किया जाता है परन्तु जब वह कालभैरवी बन जाती है तब सब चुप बैठ जाते है। ''कलिया कसाई, जिस तरह तूने मेरे कुनुवां के बाप को जलाया, उसी तरह तुझे भी जिंदा ही आग में भून-भूनकर न जलाया तो मैं भी ..... मैं भी ..... मैं औरत जात नहीं।''[6]

इस प्रकार नारी को अबला बने रहना नहीं चाहिए यदि वह अबला बनी रहेगी तो उसका शोषण होता रहेगा। हर व्यक्ति को इतनी शक्ति अवश्य जुटानी चाहिए कि वह अपने ऊपर हुए शोषण के प्रति आवाज उठा सके।

'तुम्हारे लिए' हिमांशु जोशी का सन् 1978 धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ उपन्यास है। इस उपन्यास पर दूरदर्शन पर धारावाहिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत हुआ तथा कई भाषाओं में इसका अनुवाद भी हुआ है। इस उपन्यास की कथावस्तु विराग-अनुमेहा तथा सुहास-अनुमेहा के इर्द-गिर्द घूमती है। इसमें प्रेम का त्रिकोण है। प्रेम की आग व्यक्ति को आत्मदाह तक पहुँचाती है। इसका यथार्थ उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। दुविधास्थिति, निराशामय व संघर्षमय जीवन, अर्थाभाव इस उपन्यास की विशेषता है।

यह उपन्यास विराग के संघर्षमय जीवन से जुड़ा हुआ है। विराग प्रेम में असफल होने पर बेरोजगारी की मार झेलते-झेलते परेशान हो जाता है। उसके परिवार को उससे बहुत आशाएं रहती है कि वह नौकरी कर परिवार का पालन-पोषण करेगा।

यह उपन्यास अनुमेहा व विराग के माध्यम से उन सभी युवक-युवतियों के प्रेम के अधूरेपन को उजागर करता है जो प्रेम में असफल होकर अपनी दिशा को ही मोड़ देते है जैसा कि अनुमेहा ने किया। वह अपने व्यक्तिगत प्रेम को दीन-दुखियों की सेवा व मानव सेवा में परिवर्तित कर देती है। ''जो स्मृतियाँ दुःख दें, उन्हें भुला देना ही हितकर है।''[7]

'सु-राज' हिमांशु जोशी जी का 1981 में प्रकाशित हुआ उपन्यास है। सु-राज में उत्तराखंड का पर्वतीय आंचलिक परिवेश है। इस उपन्यास में स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने वाले गांगि की मनः स्थिति का वर्णन किया गया है जिन्होंने स्वतंत्रता के बाद रामराज्य का सपना देखा जो सत्य साबित नहीं हुआ। समाज की स्थिति बद से बदतर होती चली गई। फिरंगी ही देश छोड़कर गये थे परन्तु अन्याय, अत्याचार, शोषण अब भी मौजूद था। ''1942 में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन चला- 'करो या मरो' का नारा।''[8]

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/3.1.2022.402-405

'सु-राज' के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिवर्तन को चित्रित किया गया है। स्वतंत्रता से पूर्व जो स्थिति भी स्वतंत्रता के बाद उससे भी खराब हो गई इसका बखूबी वर्णन किया गया है। भ्रष्ट शासनतंत्र व्यवस्था, वर्ण तथा वर्ग के आधार पर आंतरिक संघर्ष को भी दिखाया गया है। पटवारी, पेशकार व कलक्टर सामाजिक सुधार के नाम पर आम जनता का शोषण करते थे।

इससे आहत होकर गांगि का कहते है ''अब तक मैं समझा था, सुराज आ गया, गांधि बाबा का सुराज। अपने लोगों का राज! पर अब लगने लगा है, सुराज नहीं आया, और न फिलहाल आने वाला है। यह पटवारी का राज है। थोकदार-जमीदारों का।''[9]

अन्याय, अत्याचार, शोषण, आर्थिक स्थिति सही न होने के कारण परिवार का विघटन, स्त्री पर होने वाला अत्याचार, शोषण आज भी समाज में मौजूद है। इसके कारण आज भी व्यक्ति को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

'अंधेरा और' थारू जीवन पर आधारित है। इसमें परसिया के घर तथा भदरपुर गाँव का वर्णन किया है। जहाँ गरीब निवास करते है गोबर मिट्टी से लिपी देहरी, कच्चे किवाड़ जहाँ बरसात के दिनों में कमर तक पानी आ जाता है। भीखू की मदैया पंचमी काकी की झुपड़ियाँ कंचनिया की मंडैया आदि का वास्तविक रूप में वर्णन किया गया है।

'कांछा' नेपाल के ग्रामीण जन-जीवन पर आधारित हैं। उपन्यास का चरित्र गुरंग नशाखोर है। वह स्त्रियों के साथ बाजारू के समान व्यवहार करता हैं। गुरंग का कांछा के प्रति व्यवहार भी अच्छा नहीं है। वह उसकी बकरी को काट देता है। वह लड़ता-झगड़ता है तो वह उसकी पिटाई कर देता है। इस प्रकार उसका व्यवहार अच्छा नहीं है।

''मेरी बकरी तुमने क्यो काटी ? क्यों काटी ?'' वह पागलों की तरह लगातार चीखे जा रहा था।''[10]

नशाखोरी समाज के लिए अभिशाप बनता जा रहा है। नशे में व्यक्ति को अच्छे-बुरे की पहचान नहीं होती है। नशे के लिए व्यक्ति गलत कार्य करने से भी नहीं कतराता। यह मनुष्य जीवन को तबाह कर देता है।

निष्कर्ष:- निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिमांशु जोशी जी का उपन्यास जगत में अतुलनीय योगदान है। उन्होंने अपनी अनुभूतियों एवं जीवन सत्यों को जीवंतता के साथ अपने उपन्यासों में अभिव्यक्त किया है।

हिमांशु जोशी जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं नैतिक विसंगतियों पर गहरी चोट की है। उन्होंने आम जनता की समस्याओं को वाणी प्रदान की है।

आज भी समाज में नशाखोरी, अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार, शोषण, रिश्वतखोरी मौजूद है। इन सभी पर अंकुश लगाया जाना चाहिए। यह पहल व्यक्ति को सबसे पहले स्वयं से करनी होगी। तभी इन पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

संदर्भ:-

अरण्य, - हिमांशु जोशी, पृष्ठ सं. 13

महासागर, - हिमांशु जोशी, पृष्ठ सं. 222

महासागर, - हिमांशु जोशी, पृष्ठ सं. 200

छाया मत छूना मन, - हिमांशु जोशी, पृष्ठ सं. 337

समय साक्षी है, - हिमांशु जोशी, पृष्ठ सं. 44

कगार की आग, - हिमांशु जोशी, पृष्ठ सं. 440

तुम्हारे लिए, - हिमांशु जोशी, पृष्ठ सं. 299

सु-राज, - हिमांशु जोशी, पृष्ठ सं. 326

कांछा, - हिमांशु जोशी, पृष्ठ सं. 373